तर्ज--रस्मे उलफत को निभाए तो निभाए

तेरी मेहरबानी है हमपे कितनी
अकेली जुबां से मै कह न पाऊं
मेरा रोम रोम जुबां बन के गाए
सिफत मेरे धनी की मैं कह न पाऊं

1--मुझ एक को कोटन धड़ लगे हों
कोटन मुंह में कोटन जुबां बोलती हो
तेरे एक अहसान के बदले में
मैं अपने को तो सर भर न पाऊं

2--मुझे माया के जाल से है निकाला
त्रगुन के फंद को है काट डाला
तेरे चरणो मे है निसबत मेरी
घड़ी घड़ी पल पल गुण तेरे गाऊं

Nijanand App

3--ईमां इश्क को मेरे कायम रखना
फरेबों की दुनिया मे फंस ना जाऊं
आत्म मेरी के तुम प्राण प्रीतम
मैं अंगना तेरी हूं तेरा इश्क पाऊं

4--मांग लिया खेल हमरी खता थी
जुदायगी की इतनी तो ही सजा दी
अब तो बख्श दो मैं अंगना हूं तेरी
बन अबला अब तो अर्ज गुजारूं

Nijanand App